

भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

सतावनवाँ दीक्षांत समारोह

प्रथम दिवस : दिनांक 4 फरवरी 2019

भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के 57वें दीक्षांत समारोह सप्ताह (फरवरी 4-8, 2019) का शुभारंभ 4 फरवरी 2019 को हुआ। इस कार्यक्रम के चेयरमैन डॉ. बी.एस. ढिल्लन, कुलपति, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना और संचालक डॉ. राधा प्रसन्ना, प्राध्यापक, सूक्ष्मजीव विज्ञान संभाग थे। इनके साथ मंच पर डॉ. ए.के. सिंह, निदेशक, भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान और डॉ. रश्मि अग्रवाल, अधिष्ठाता व संयुक्त निदेशक (शिक्षा) भी मौजूद थे। निर्णायक मंडल के सदस्यों में डॉ. वी.के. ठाकुर, निदेशक, प्रसार शिक्षा, डॉ. वाई.एस. परमार औद्योगिक एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश; डॉ. यू.सी. सूद, पूर्व निदेशक, भा.कृ.सांख्यिकी अनु.संस्थान ; डॉ. के.आर. कौंडल, पूर्व संयुक्त निदेशक (अनुसंधान), भा.कृ.अ.संस्थान; डॉ. ए.के. व्यास, सहायक महानिदेशक, भा.कृ.अनु.परिषद (मानव संसाधन) भी इस कार्यक्रम में मौजूद थे।

डॉ. रश्मि अग्रवाल ने अपने भाषण में बताया कि छात्रों द्वारा किए गए अनुसंधान से प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में 300 के भी अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इस कार्यक्रम में कुल 37 प्रस्तुतीकरण किए जाने हैं, जिनमें 21 एम.एस-सी. और 17 पी.-एच.डी. प्रस्तुतीकरण शामिल होंगे।

फसल सुधार के अंतर्गत भंडारण के दौरान मक्के में दाना कैरोटिनाॅएड्स के अवधारण को प्रभावित करने वाले अभ्यर्थी जीन (जीनों) की आनुवंशिकी विविधता का विश्लेषण एवं सत्यापन; गेहूँ में जी.ए. प्रतिक्रियाशील जीन एवं बीज उत्पादन पर प्रस्तुतीकरण किए गए। आण्विक जीव विज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी के अंतर्गत पुष्पगुच्छ प्रध्वंस प्रतिरोधकता के लिए भेदकारक धान जीनरूपों में मैग्नापोर्थे-प्रतिक्रियाशील डब्ल्यू.आर.के.वाई. जीनों का लक्षण अध्ययन पर प्रस्तुतीकरण किया गया। सूत्रकृमि विज्ञान संबंधी प्रस्तुतीकरण के अंतर्गत सात भारतीय फोटोरोब्डस प्रभेदों में फोटोक्स विष में आनुवंशिक एवं विष संबंधी विविधता को रेखांकित किया गया और पाया गया कि इसके उपयुक्त अनुकूलीकरण के उपरांत कीट रोधी ट्रांसजेनिक पौधों के विकास में इसके उपयोग की प्रबल संभावनाएँ मौजूद हैं।

पादप रोगविज्ञान संभाग के प्रस्तुतीकरण में महाराष्ट्र और भा.कृ.अ.संस्थान, नई दिल्ली की अंगूर की व्यावसायिक किस्मों में अंगूरों को प्रभावित करने वाले वाॅयरॉइड के लक्षण अध्ययन किए गए तथा त्वरित नैदानिक प्रोटोकॉल के विकास के बारे में वर्णन किया गया। अंगूरों को प्रभावित करने वाले ज्ञात 5 वाॅइराएड में केवल 4 की पता आर.टी.-पी.सी.आर., क्लोनिंग एवं सीक्वेंसिंग में लगाया जा सका। कीट विज्ञान संबंधी

प्रस्तुतीकरण में मक्का के पौधों में स्वाइन हो के विरुद्ध पादप प्रतिरोधी प्रणाली पर चर्चा की गई। मक्का जीनरूपों - सी.पी.एम. 13, सी.पी.एम. 15, सी.पी.एम. 18 और सी.पी.एम. 8 ने स्वाइन हो के विकास, वृद्धि और संतति उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला तथा इनका उपयोग उसके विरुद्ध प्रतिरोधी प्रजनन कार्यक्रमों में किया जा सकता है। कृषि रसायन संभाग के प्रस्तुतीकरण में जैविक नाशीजीवनाशकों एवं इनकी उन्नत निधानी आयु पर प्रकाश डाला गया।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन स्कूलके अंतर्गत सौर-ऊर्जा युक्त वायु पूरित अनाज शुष्कक का विकास ; विभिन्न टिलेज के अंतर्गत गेहूँ में मृदा एवं फसल प्राचलों का आकलन , प्रॉक्सीमल हाइपरस्पेक्ट्रल तकनीक के प्रयोग से फसल अवशेष एवं नाइट्रोजन प्रबंधनविषयों पर प्रस्तुतीकरण हुए।

बेसिक साइंसेस स्कूल के अंतर्गत सोयबीन के जी.एम.आई.पी.के2 जीन के सटीक संपादन के लिए सी.एस.आई.एस.पी.आर./सी.ए.एस.9 प्लाज्मिड के डिजाइन, निर्माण, सत्यापन पर अध्ययन ; धान में ऊष्मा प्रतिबल के अंतर्गत मेलाटोनिन की भूमिका की विवेचना ; मक्का में खरपतवार प्रबंधन के लिए ब्राउन मैन्यूरिंग अनुकूलन एवं जीरो-टिल गेहूँ में उसका उत्तरवर्ती प्रभाव ; धान की फसल के अंतर्गत वर्धित कार्बन डाईऑक्साइड और तापमान का मृदा में नाइट्रोजन रूपांतरण पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव; असम में विभिन्न भू-उपयोग प्रणालियों के अंतर्गत मृदा में पोटेसियम आपूर्ति क्षमता पर प्रस्तुतीकरण हुए।

उद्यान विज्ञान स्कूल के अंतर्गत गेंदे के ओव्यूल कल्चर से प्राप्त दोहरे अगुणित वंशक्रम के इन-विट्रो व्यापक उत्पादन का अध्ययन ; बैंगन में फसल लक्षणों का आनुवंशिक एवं आण्विक लक्षण अध्ययन ; जंगली सेबजर्मप्लाज्म का आकृतिक और आण्विक विविधता विश्लेषण ; नींबू के छिलके का मूल्यवर्धन : निष्कर्षण, लक्षण अध्ययन एवं प्रयोजनीकरण पर प्रस्तुतीकरण हुए।

सामाजिक विज्ञान स्कूल के अंतर्गत उत्तरी महाराष्ट्र में टपक सिंचाई के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पर अनुसंधान; केरल में प्रसार कर्मियों के मूल क्षमताओं को बढ़ाने में प्रशिक्षण की प्रभावशीलता ; कृषि मूल्य पूर्वानुमान के लिए इम्पीरिकल मोड डिकंपोजीशन आधारित तटस्थ नेटवर्क का अध्ययन पर प्रस्तुतीकरण हुए। जैवसूचना विज्ञान के अंतर्गत काली मिर्च में सूखा प्रतिक्रियाशीलता के लिए ट्रांसक्रिप्टोम आधारित बेव-जीनोमिक संसाधनों के विकासपर प्रस्तुतीकरण तथा कंप्यूटर अनुप्रयोग के अंतर्गत भारत में मक्का के लिए बहु-पर्यावरण मानचित्रण के लिए जी.आई.एस. विधि पर प्रस्तुतीकरण किए गए।